मण्डल चित्र

श्री सुगन्ध दशमी व्रत पूजा

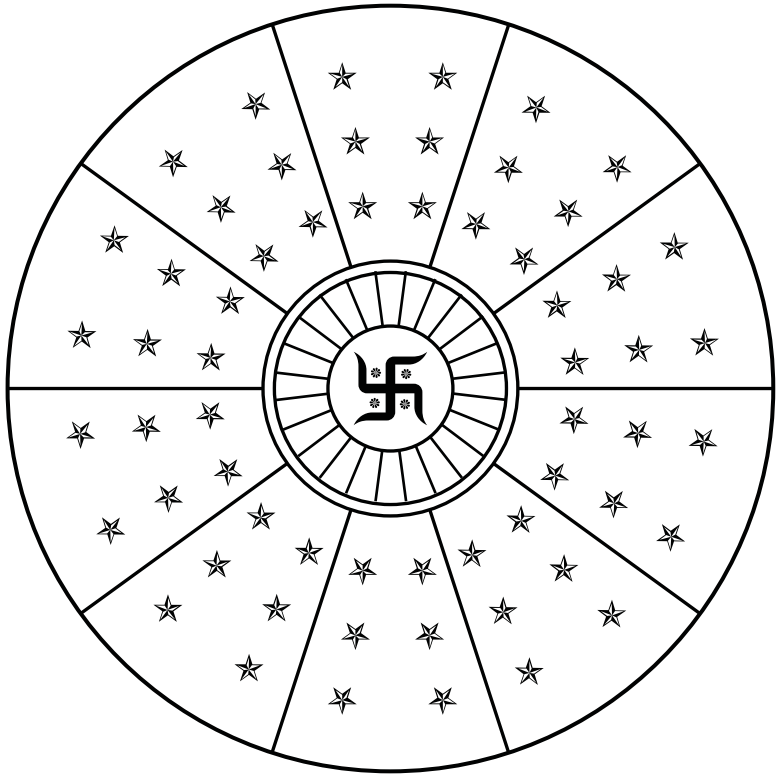

मध्य वलय 卐

प्रथम से दशम कोष्ठ छः-छः अर्घ्य

रचयिता : प.पू. आचार्य विशदसागर जी महाराज

कृति – **सुगन्ध दशमी व्रत विधान पूजा**

रचयिता – प. पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशद सागर जी महाराज

संस्करण – द्वितीय-2018 प्रतियाँ – 1000

सम्पादन . मुनि 108 श्री विशाल सागर जी महाराज

सहयोग – आर्यिका श्री भक्तिभारती माताजी
ऐलक श्री विदक्ष सागर जी, क्षुल्लक श्री विसौम सागर जी
क्षुल्लिका श्री वात्सल्य भारती माताजी

संकलन – आरती दीदी-8700876822

सम्पर्क सूत्र – ज्योति दीदी-9829076085, सपना दीदी-9829127533
आस्था दीदी, आरती दीदी

प्राप्ति स्थल – 1. सुरेश जैन सेठी, शांति नगर, जयपुर – 9413336017
2. हरीश जैन, दिल्ली – 9136248971
3. महेन्द्र कुमार जैन, सैक्टर-3 रोहिणी – 09810570747
4. पदम जैन, रेवाड़ी – 09416888879
5. श्री सरस्वती पेपर स्टोर, चांदी की टकसाल, जयपुर
मो.: 8561023344, 8114417253

पुण्यार्जक :
संजय जैन - पूनम जैन
मकान नं. 63, गली नं. 8, बलवीर नगर, शादरा, दिल्ली-32
मो.: 9818833400

मुद्रक – बसन्त जैन, श्री सरस्वती प्रिन्टिंग इण्स्ट्रीज
एस.बी.बी.जे. के नीचे, चांदी की टकसाल, जयपुर
मो.: 8114417253, 8561023344

मूल्य – 21/- रु. मात्र

''सुगन्धा दशमीव्रत''

''इन्द्रिय और मन का दमन ही संयम कहलाता है
ऐसे संयम को देख यम भी डर जाता है
जैसे भी हो एक बार संयम का स्वाद लो भाई
संयम से पापी भी परमात्मा बन जाता है''

जैन शासन अनादि अनन्त है और तीर्थंकरों की परम्परा भी अनादि अनंत है। व्रतों की परम्परा भी अनादि अनंत शाश्वत है।

इन व्रतों के दो भेद हैं - अनादि अनंत एवं सादि-सान्त इसी प्रकार काम्य और अकाम्य के भेद से भी व्रत दो प्रकार के हैं। जो किसी भी कामना इच्छा से धन प्राप्ति, पुत्र प्राप्ति, स्वास्थ्य लाभ आदि की भावना से किये जाते हैं वे काम्यव्रत हैं।

सुगन्ध दशमी आदि व्रत काम्यव्रत के अन्तर्गत ही आते हैं। दिगम्बर जैन मान्यता में सुगन्ध दशमी व्रत का काफी महत्त्व है इसीलिए प्राय: स्त्रियाँ आए वर्ष इस व्रत को करती हैं। इस धार्मिक व्रत को विधि पूर्वक करने से अशुभ कर्मों का क्षय, शुभास्त्रव और पुण्यबन्ध होता है तथा परम्परा से स्वर्ग मोक्ष की प्राप्ति होती है।

यह व्रत भाद्रपद शुक्ला दशमी को जिसे सुगन्ध दशमी/धूप दशमी आदि के नाम से भी जाना जाता है किया जाता है। इस दिन सभी जैन स्त्री पुरुष मन्दिरों में जाकर धूप खेते है। उस दिन वायुमण्डल अत्यन्त सुगन्धमय एवं स्वच्छ हो जाता है।

यह व्रत दश वर्ष में पूर्ण होता है व्रत के दिन विधि पूर्वक **सुगन्ध दशमी व्रत पूजा विधान** कर उत्साह पूर्वक समापन करना चाहिए। साथ ही व्रत के दिन कथा भी पढ़नी चाहिए।

परम पूज्य आचार्य गुरुवर श्री 108 विशद सागर जी महाराज ने यह सुगन्ध दशमी पूजा विधान लिखकर महान उपकार किया है। यथायोग्य इस पुस्तक का उपयोग कर पुण्यार्जन करें। गुरुदेव ने इस उपकार के लिए उनके चरणों में शत्-शत् नमन।

- मुनि विशाल सागर (संघस्थ)

वर्षायोग-2015, मानसरोवर, जयपुर

सुगन्धा दशमी व्रत कथा

वीतराग के पद प्रणमि, प्रणमि जिनेश्वर वान।
कथा सुगन्ध दशमीं तनी, कहूँ परम सुखदान।।

जम्बूद्वीप के विजयार्द्ध पर्वत की उत्तरश्रेणी में शिव मंदिर नामक एक नगर है। वहाँ का राजा प्रियंकर और रानी मनोरमा थी, सो वे अपने धन यौवन आदि के ऐश्वर्य में मदोन्मत्त हुए जीवन के दिन पूरे कर रहे थे। धर्म किसे कहते हैं, वह उन्हें मालूम भी न था।

एक समय सुगुप्त नाम के मुनिराज कृश शरीर दिगम्बर मुद्रायुक्त आहार के निमित्त बस्ती में आये उन्हें देखकर रानी ने अत्यंत घृणापूर्वक उनकी निन्दा की और पान की पिच मुनि पर थूंक दी। सो मुनि तो अन्तराय होने के कारण बिना ही आहार लिये पीछे वन में चले गये और कर्मों की विचित्रता पर विचार कर सम भाव धारण कर ध्यान में निमग्न हो गये।

परंतु थोड़े दिन पश्चात् रानी मरकर गधी हुई फिर सूकरी हुई, फिर कूकरी हुई, फिर वहाँ से मरकर मगध देश के वसंततिलक नगर में विजयसेन राजा की रानी चित्रलेखा की दुर्गन्धा नाम की कन्या हुई। सो इसके शरीर से अत्यन्त दुर्गन्ध निकला करती थी।

एक समय राजा अपनी सभा में बैठा था कि धनपाल ने आकर समाचार दिया कि हे राजन्! आपके नगर के वन में सागरसेन नाम के मुनिराज चतुर्विध संग सहित पधारे हैं।

यह समाचार सुनकर राजा प्रजा सहित वन्दना को गया और भक्तिपूर्वक नतमस्तक हो राजा ने स्तुति वन्दना की। पश्चात् मुनि तथा श्रावक के धर्मों का उपदेश सुनकर सबने यथा शक्ति व्रतादिक लिये। किसी ने केवल सम्यक्त्व ही अंगीकार किया। इस प्रकार उपदेश सुनने के बाद राजा ने नम्रतापूर्वक पूछा -

हे मुनिराज! यह मेरी कन्या दुर्गन्धा किस पाप के उदय से ऐसी हुई है सो कृपाकर कहिये। तब श्री गुरु ने उसके पूर्व भवों का समस्त वृत्तांत मुनि की निन्दादि

का कह सुनाया, जिसको सुनकर राजा और कन्या सभी को पश्चाताप हुआ। निदान, राजा ने पूछा- प्रभो! इस पाप से छूटने का कौन सा उपाय है? तब श्री गुरु ने कहा -

समस्त धर्मो का मूल सम्यग्दर्शन है, सो अर्हन्तदेव, निर्ग्रन्थ गुरु और जिनभाषित धर्म में श्रद्धा करके उनके सिवाय अन्य रागी-द्वेषी-देव, भेषी गुरु, हिंसामय धर्म का परित्याग कर अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और परिग्रह प्रमाण इन पांच व्रतों का अंगीकार करें और सुगन्ध दशमी का व्रत पालन करें जिससे अशुभ कर्म का क्षय होवे।

इस व्रत की विधि इस प्रकार है कि- भादों सुदी दशमी के दिन चारों प्रकार के आहारों का त्याग कर समस्त गृहारम्भका त्याग करें और परिग्रह का भी प्रमाणकर जिनालय में जाकर श्री जिनेन्द्र की भाव सहित अभिषेक पूर्वक पूजा करें। सामायिक स्वाध्याय करें। धर्म कथा के सिवाय अन्य विकथाओं का त्याग कर रात्रि में भजनपूर्वक जागरण करें। पश्चात् दूसरे दिन चौबीस तीर्थंकरों की अभिषेक पूर्वक पूजा करके अतिथियों (मुनि व श्रावक) को भोजन कराकर आप पारणा करें। चारों प्रकार का दान देवें। इस प्रकार दश वर्ष तक यह व्रत पालन कर पश्चात् उद्यापन करें।

अर्थात् चमर, छत्र, घण्टा, झारी, ध्वजा आदि दश दश उपकरण जिन मंदिर में भेंट देवें और दश प्रकार के श्रीफल आदि फल दश घर के श्रावकों को बांटें। यदि उद्यापन की शक्ति न होवे, तो दूना व्रत करें।

उत्तम व्रत उपवास करने से, मध्यम कांजी आहार और जघन्य एकासन करने से होता है।

इस प्रकार राजा प्रजा सबने व्रत की विधि सुनकर अनुमोदना की और स्व स्थान को गये। दुर्गन्धा कन्या ने मन, वचन, काय से सम्यत्वपूर्वक व्रत का पालन किया। एक समय दसवें तीर्थंकर श्री शीतलनाथ भगवान के कल्याणक के समय देव तथा इन्द्रों का आगमन देखकर उस दुर्गन्धा कन्या ने निदान किया कि मेरा जन्म स्वर्ग में होवे, सो निदान के प्रभाव से यह राजकन्या स्वर्ग में अप्सरा हुई और उसका पिता राजा मरकर दसवें स्वर्ग में देव हुआ।

यह दुर्गन्धा कन्या अप्सरा के भव से आकर मगध देश के पृथ्वीतिलक नगर

में राजा महिपाल की रानी मदनसुन्दरी के मदनावती नाम की कन्या हुई, सो अत्यन्त रूपवान और सुगंधित शरीर युक्त हुई और कौशाम्बी नगरी के राजा अरिदमन के पुत्र पुरुषोत्तम के साथ इस मदनावती का ब्याह हुआ। इस प्रकार वे दम्पत्ति सुखपूर्वक कालक्षेप करने लगे।

एक समय वन में सुगुप्ताचार्य संघ सहित आये तब वह राजकुमार पुरुषोत्तम अपनी स्त्री सहित वन्दना को गया तथा और भी नगर के लोग वन्दना को गये सो स्तुति नमस्कार आदि करने के अनन्तर श्री गुरु के मुख से जीवादि तत्त्वों का उपदेश सुना! पश्चात् पुरुषोत्तम ने कहा -

हे स्वामी ! मेरी यह मदनावती स्त्री किस कारण से ऐसी रूपवान और अति सुगन्धित शरीर युक्त है? तब श्री गुरु ने मदनावती के पूर्व भवांतर कहे और सुगन्धदशमी के व्रत का महात्म्य बताया तो पुरुषोत्तम और मदनावती दोनों अपने भवांतर की कथा सुनकर संसार देह भोगों से विरक्त हो दीक्षा लेकर तपश्चरण करने लगे।

इस प्रकार तपश्चरण के प्रभाव से मदनावती स्त्रीलिंग छेदकर सोलहवें स्वर्ग में देव हुई। वहाँ बाईस सागर सुख से आयु पूर्ण करके अन्त समय वहाँ से चयकर मगध देश के वसुन्धा नगरी में मकरकेतु राजा के यहाँ देवी भट्टारानी के कनककेषु नामका सुन्दर गुणवान पुत्र हुआ।

पिता के दीक्षा ले लेने पर कितनेक काल राज्य करके वह भी अपने मकरध्वज पुत्र को राज्य दे दीक्षा लेकर तपश्चरण करके और देश विदेशों में विहार करके अनेक जीवों को धर्म के मार्ग में लगाने लगे। इस प्रकार कितनेक काल कनककेतु मुनिनाथ को केवलज्ञान हुआ और बहुत काल तक उपदेशरूपी अमृत की वृष्टि करके शेष अघाति कर्मों का नाशकर परम पद मोक्ष को प्राप्त हुए।

इस प्रकार सुगन्ध दशमी का व्रत पालकर दुर्गन्धा भी अनुक्रम से मोक्ष को प्राप्त हुई भव्य जीव यदि यह व्रत पाले तो अवश्य ही उत्तमोत्तम सुखों को पावें।

सुगन्ध दशमी व्रत कियो, दुर्गन्धा ने सार।
सुर नर के सुख भोग जो, अनुक्रम गई भव पार।।

सुगंधा दशमी व्रत पूजा

स्थापना

श्रेष्ठ सकल सौभाग्य सुव्रत शुभ, है सुगंध दशमी शुभ नाम।
भाव सहित व्रत पालन करने, से बन जाते बिगड़े काम।।
व्रत पालन करने वाले कई, हुए लोक में सर्व महान।
ऐसा अक्षय फलदायी व्रत, का हम करते हैं आह्वानन्।।

दोहा - शीतलनाथ जिनेन्द्र का, करते हम गुणगान।
तिष्ठो मेरे हृदय में, हे जिनेन्द्र! प्रभु आन।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमी व्रताराध्य श्री शीतलनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्।
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अष्टक (शम्भू छन्द)

भव भोगों में फँसकर स्वामी, जीवन यह व्यर्थ गवाया है।
ना जन्म मरण से छुटकारा, हमको अब तक मिल पाया है।।
हे नाथ! भक्त के ऊपर अब, शुभ मेघ दया के बरसाओ।
हमको भी दर्शन दो स्वामी, न और हमें अब तरसाओ।। 1।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमी व्रताराध्य श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अन्तर मन शीतल करने, चन्दन घिसकर के लाए हैं।
क्रोधादि कषाएँ पूर्ण नाश, निज शान्ती पाने आए हैं।।
हे नाथ! भक्त के ऊपर अब, शुभ मेघ दया के बरसाओ।
हमको भी दर्शन दो स्वामी, न और हमें अब तरसाओ।। 2।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमी व्रताराध्य श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चन्दनम् नि.स्वा.।

चेतन की निर्मलता पाने, हम चरण शरण में आए हैं।
शाश्वत अक्षय पद पाने को, यह अक्षय अक्षत लाए हैं।।
हे नाथ! भक्त के ऊपर अब, शुभ मेघ दया के बरसाओ।
हमको भी दर्शन दो स्वामी, न और हमें अब तरसाओ।। 3।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमी व्रताराध्य श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद विनाशनाय अक्षतं नि.स्वा.।

प्रभु काम वासना से वासित, होकर सारा जग भटकाए।
अब काम अग्नि का रोग नशे, हम पुष्प चढ़ाने को लाए।।
हे नाथ! भक्त के ऊपर अब, शुभ मेघ दया के बरसाओ।
हमको भी दर्शन दो स्वामी, न और हमें अब तरसाओ।। 4।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमी व्रताराध्य श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

तृष्णा दुख देती है हमको, छुटकारा पाने हम आए।
अब क्षुधा मिटाने को प्रभुवर, नैवेद्य चढ़ाने यह लाए।
हे नाथ! भक्त के ऊपर अब, शुभ मेघ दया के बरसाओ।
हमको भी दर्शन दो स्वामी, न और हमें अब तरसाओ।। 5।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमी व्रताराध्य श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक की ज्योति जले अनुपम, अंधियारा दूर भाग जाए।
यहद ीपज लाकरह ेस वामी,ह मम ोक्षन शानेक ोअ ाए।।
हे नाथ! भक्त के ऊपर अब, शुभ मेघ दया के बरसाओ।
हमको भी दर्शन दो स्वामी, न और हमें अब तरसाओ।। 6।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमी व्रताराध्य श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपे निर्वपामीति स्वाहा।

हम धूप जलाते अग्नी में, क्षय कर्मों का प्रभु हो जाए।
शिव पद के राही बन जाएँ, मम् मन मयूर शुभ हर्षाए।।
हे नाथ! भक्त के ऊपर अब, शुभ मेघ दया के बरसाओ।
हमको भी दर्शन दो स्वामी, न और हमें अब तरसाओ।। 7।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमी व्रताराध्य श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं नि. स्वाहा।

फल चढ़ा रहे यह शुभकारी, भव सिन्धू से मुक्ती पाएँ।
हे करुणा सागर दया करो, हम मोक्ष महल शुभ पा जाएँ।।
हे नाथ! भक्त के ऊपर अब, शुभ मेघ दया के बरसाओ।
हमको भी दर्शन दो स्वामी, न और हमें अब तरसाओ।। 8।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमी व्रताराध्य श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय महामोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरु, दीपक शुभ धूप जलाए हैं।
फल रखकर अनुपम अर्घ्य बना, हम यहाँ चढ़ाने लाए हैं।।
हे नाथ! भक्त के ऊपर अब, शुभ मेघ दया के बरसाओ।
हमको भी दर्शन दो स्वामी, न और हमें अब तरसाओ।। 9।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमी व्रताराध्य श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - निज आतम के ध्यान से, मिले आत्म आनन्द।
शांती धारा दे रहे पाने सहजानन्द।।

शान्तये शांतिधारा.....

आत्म ज्योति प्रगटित किए, अखिल विश्व के नाथ।
पुष्पाञ्जलि करते विशद, चरण झुकाते माथ।।

इति पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जयमाला

दोहा - संयम व्रत चारित्र का, पाएँ फल तत्काल।
श्रेष्ठ सकल सौभाग्य व्रत, की गाते जयमाल।।

(ज्ञानोदय छन्द)

समवशरण गिरनार सुगिरि पर, नेमिनाथ का आया खास।
श्री कृष्ण परिवार सहित तब, दर्शन करने पहुँचे पास।।
रुक्मणि ने पूछा हे स्वामी!, किया कौन सा पुण्य विशेष।
यह अखण्ड सौभाग्य मिला जो, बतलाओ हे श्री जिनेश!।। 1।।
गणधर बोले मगध देश में, लक्ष्मीपुर पावन स्थान।
सोमसेन ब्राह्मण की पत्नी, लक्ष्मी मति को था अभिमान।।
मुनी समाधिगुप्ति की निन्दा, करके हुआ भगंदर रोग।
मरकर भैंस सूकरी कुत्ती, गधी नरक का पाई योग।। 2।।
फिर दुर्जन कुल नीच प्राप्त कर, माता पिता से हुई विहीन।
भीख मांगकर जीवन बीता, रहती थी होकर के दीन।।
नदी नर्मदा के तट पर शुभ, मुनिवर का पाया संदेश।
ग्रहण किए व्रत उसने गुरु से, मरकर पहुँची कोंकण देश।। 3।।

नन्दन सेठ की नन्दावति से, लक्ष्मी मती हुई मनहार।
नन्दा स्वामी महामुनि को, दिया भाव से शुभ आहार।।
मुनिवर से उसने भव पूँछे, सात भवों का किये कथन।
हो अखण्ड सौभाग्य प्राप्त अब, कहो प्रभू ऐसा वर्णन।। 4।।
करो सकल सौभाग्य सुव्रत का, बेटी भाव सहित पालन।
दश वर्षों का व्रत करके फिर, करो क्रिया से उद्यापन।।
व्रत का पालन करके उसने, पुण्य कमाया अपरम्पार।
कुन्दनपुर नृप भीष्म के गृह में, जन्म लिया जिसने शुभकार।। 5।।
रुक्मणि नाम पड़ा था जिसका, श्री कृष्ण से ब्याह किया।
पटरानी पद पाने का भी, जिसने शुभ सौभाग्य लिया।।
गणधर के चरणों में रुक्मणि, ने फिर पावन व्रत पाए।
उद्यापन करके परिजन सब, मन में भारी हर्षाए।। 6।।
पुनः आर्यिका के व्रत करके, सुतप किया जिसने शुभकार।
मरण समाधी कर सोलहवें, स्वर्ग में देव बनी मनहार।।
माह भाद्र पद शुक्ल पक्ष में, पाँचें से दशमी तक खास।
पुष्पाञ्जलि व्रत करके अनुपम, दशमी का करके उपवास।। 7।।
जिन पूजा अभिषेक क्रिया कर, खेना अनुपम धूप महान।
उद्यापन के शुभ अवसर पर, करना शीतल नाथ विधान।।
यह सुगन्ध दशमी व्रत करके, पाना हैं सौभाग्य महान।
कर्म श्रृंखला पूर्ण नाशकर 'विशद' प्राप्त करना निर्वाण।। 8।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमी व्रताराध्य श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - सकल व्रतों को प्राप्त कर, करें कर्म का नाश।
भव की बाधा नाशकर, पाएँ मोक्ष निवास।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

सुगन्ध दशमी मण्डल विधान

''मंगलाचरण''

दोहा - भूत भविष्यत काल के, पूज्य हैं जिन अरहंत।
अर्हत सिद्धाचार गुरु, उपाध्याय सब संत।।
जैनागम जिन धर्म है, पूज्य अनादि त्रिकाल।
जिन चैत्यालय चैत्य पद, वन्दन है नत भाल।।

ऋषभादिक चौबीस जिन, जग में हुए महान।
भव्य जीव जिनके चरण, करते हैं गुणगान।।
गुरु गौतम के चरण में, वन्दन बारम्बार।
द्वादशांग वाणी विमल, जग में मंगलकार।।
जिन शासन में व्रत कहे, महिमा मयी महान।
भाव सहित जो भी करें, होय कर्म की हान।।
व्रत सुगन्ध दशमी रहा, मंगलमय शुभकार।
जिसकी महिमा है अमित, भवदधि तारण हार।।
विधि से व्रत जो भी करें, उनके जागें भाग्य।
सुखशांती आनन्द हो, बढ़े विशद सौभाग्य।।

मुक्ती पथ पर वे बढ़ें, पावे शिव सोपान।
संयम धारण कर विशद, पावें पद निर्वाण।।

''व्रत विधान''

महा भाद्रपद जानिए, शुक्ल पक्ष शुभकार।
पर्यूषण शुभ पर्व में, व्रत हो मंगलकार।।
पञ्चमि से दशमी तिथी, छह दिन का व्रत जान।
व्रत का उत्तम फल कहा, गति विधि को पहिचान।।
पञ्चमी को उपवास कर, एकाशन दिन चार।
दशमी प्रोषधवास कर, तजे पूर्ण आहार।।
विषयों से अनुराग तज, तज आहार कषाय।
धर्म ध्यान में लीन हो, मन से प्रभु को ध्याय।।

दश वर्षों तक व्रत करें, भक्ति भाव के साथ।
मण्डल आदि विधान कर, जोड़ें अपने हाथ।।
उद्यापन फिर कीजिए, शक्ती के अनुसार।
नियम कोई धारण करें, हो आतम उद्धार।।
शक्ति हीन दूने करें, व्रत धर निर्मल भाव।
आतम के हित में लगे, धर के मन में चाव।।
जो व्रत का पालन करें, मन में कर श्रद्धान।
ज्ञान और वैराग्य धर, पावें पद निर्वाण।।

''मण्डल रचना''

पीठ लगाएँ तख्त पर, धोकर करके शुद्ध।
स्थापित जिन बिम्ब कर, मन को करें विशुद्ध।।
निर्मल प्रासुक नीर से, करके जिन अभिषेक।
पञ्चामृत अभिषेक में, धारे हृदय विवेक।।
फिर गंधोदक शीश पर, धारणकर धो हाथ।
जिन चरणों में भाव से, विशद झुकाएँ माथ।।
चौरस चौकी लगाय के, वस्त्र बिछाएँ धोय।
वलय मध्य में श्रेष्ठतम, स्वस्तिक रचना होय।।
दूजा वलय बनाय के, कोष्ठ बना चौवीस।
चौविस जिन के अर्घ्य दे, हुए जगतपति ईश।।
वलय तीसरा कीजिए, हो दश कोठादार।
छह छह बिन्दु बनाइये, अर्घ्यों के आधार।।
मण्डल रचनाकर करें, पावन जाप विधान।
शुभ सुगन्ध दशमी दिना, निश्चित हो उत्थान।।

व्रत संयम अरु नियम कर, बीज पुण्य का बोय।
केवल ज्ञानी हो विशद, शिवपुर गामी होय।।

(इत्याशीर्वाद)

श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरों की समुच्चय पूजा

स्थापना

ऋषभ अजित सम्भव अभिनन्दन, सुमति पद्म सुपार्श्व जिनराज।
चन्द्र पुष्प शीतलश्रेयांश जिन, वासुपूज्य पद पूजें आज।।
विमल अनन्त धर्म शांती जिन, कुन्थु अरह मल्ली जिन नाथ।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु, वीर चरण में जोड़ें हाथ।।

दोहा - तीर्थंकर चौविस हुए, जग में महति महान।
विशद हृदय में आज हम, करते हैं आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्रीसुगन्धदशमी-व्रतमण्डलविधाने ऋषभादि-महावीरान्त चतुर्विंशतिजिनसमूह! अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्। ॐ ह्रीं श्रीसुगन्धदशमी-व्रतमण्डलविधाने ऋषभादि-महावीरान्त चतुर्विंशतिजिनसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्रीसुगन्धदशमी-व्रतमण्डलविधाने ऋषभादि-महावीरान्त चतुर्विंशतिजिनसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

छन्द मोतियादाम

चढ़ाने लाए भरके नीर, मिटे अब जन्म जरा की पीर।
पूजते ऋषभादिक तीर्थेश, सुगन्ध दशमी दिन रहा विशेष।। 1।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतमण्डलविधाने श्री चतुर्विंशतिजिनेभ्यो! जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलम् निर्वपामीति स्वाहा।।१।।

घिसा केसर चन्दन गोसीर, मिटाने चढ़ा रहे भव पीर।
पूजते ऋषभादिक तीर्थेश, सुगन्ध दशमी दिन रहा विशेष।। 2।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतमण्डलविधाने श्री चतुर्विंशतिजिनेभ्यो! संसारतापविनाशनाय चन्दनम् निर्वपामीति स्वाहा।।२।।

चढ़ाते अक्षत धवल अनूप, जगाएँ हम निज का स्वरूप।
पूजते ऋषभादिक तीर्थेश, सुगन्ध दशमी दिन रहा विशेष।। 3।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतमण्डलविधाने श्री चतुर्विंशतिजिनेभ्यो! अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।।३।।

पुष्प यह चढ़ा रहे भगवान, काम रुज की हो जाए हान।
पूजते ऋषभादिक तीर्थेश, सुगन्ध दशमी दिन रहा विशेष।। 4।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतमण्डलविधाने श्री चतुर्विंशतिजिनेभ्यो! कामवाणविनाशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।।४।।

चढ़ाते चरु ये सरस महान्, क्षुधा का रहे ना नाम निशान।
पूजते ऋषभादिक तीर्थेश, सुगन्ध दशमी दिन रहा विशेष।। 5।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतमण्डलविधाने श्री चतुर्विंशतिजिनेभ्यो! क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।५।।

जलाकर लाए हम यह दीप, चढ़ाते जिन के चरण समीप।
पूजते ऋषभादिक तीर्थेश, सुगन्ध दशमी दिन रहा विशेष।। 6।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतमण्डलविधाने श्री चतुर्विंशतिजिनेभ्यो! मोहान्धकार विनाशनाय दीपम् निर्वपामीति स्वाहा।।६।।

अग्नि में खेते हैं हम धूप, प्राप्त हो हमको सुपद अनूप।
पूजते ऋषभादिक तीर्थेश, सुगन्ध दशमी दिन रहा विशेष।। 7।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतमण्डलविधाने श्री चतुर्विंशतिजिनेभ्यो! अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।।७।।

सरस फल चढ़ा रहे भगवान, प्राप्त हो हमको पद निर्वाण।
पूजते ऋषभादिक तीर्थेश, सुगन्ध दशमी दिन रहा विशेष।। 8।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतमण्डलविधाने श्री चतुर्विंशतिजिनेभ्यो! मोक्षफलप्राप्तये फलम् निर्वपामीति स्वाहा।।८।।

चढ़ाते वसु द्रव्यों का अर्घ्य, मिले हमको अब सुपद अनर्घ्य।
पूजते ऋषभादिक तीर्थेश, सुगन्ध दशमी दिन रहा विशेष।। 9।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतमण्डलविधाने श्री चतुर्विंशतिजिनेभ्यो! अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।९।।

दोहा - शांती धारा के लिए, भर लाए शुभ नीर।
पूजा कर जिनराज की, पाना भव का तीर।।

''शान्तये शान्तिधारा''

दोहा - पुष्पों से पुष्पाञ्जलि, करते मंगलकार।
व्रत की पूजा कर रहे, पाने भवदधि पार।।

''दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत''

''अर्घावली''

दोहा - तीर्थंकर चौबीस का, करते हम गुणगान।
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, पाने पद निर्वाण।।

(अथ प्रथम वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(चौपाई छन्द)

धर्म प्रवर्तन करने वाले, 'आदिनाथ' जी हुए निराले।
विशद भाव से महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।। 1।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतमण्डलविधाने श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि० स्वाहा।। १।।

विजयकर्म पे जिसने पाई, 'अजितनाथ' कहलाए भाई।
विशद भाव से महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।। 2।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतमण्डलविधाने श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि० स्वाहा।। २।।

सम्भव नाथ आप कहलाते, 'सम्भव' सारे कार्य कराते।
विशद भाव से महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।। 3।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतमण्डलविधाने श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि० स्वाहा।। ३।।

'अभिनन्दन' पद वन्दन मेरा, तव वन्दन से होय सवेरा।
विशद भाव से महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।। 4।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतमण्डलविधाने अभिनन्दन जिनेन्द्राये अर्घ्यं नि० स्वाहा।। ४।।

'सुमति नाथ' मति सुमति कराते, अतः लोक में पूजे जाते।
विशद भाव से महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।। 5।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतमण्डलविधाने सुमति नाथ जिनेन्द्राये अर्घ्यं नि० स्वाहा।। ५।।

'पदमप्रभु' की महिमा न्यारी, कहलाए जग संकटहारी।
विशद भाव से महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।। 6।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतमण्डलविधाने श्री पदमप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि० स्वाहा।। ६।।

जिन 'सुपार्श्व' पद पूज रचाते, जो जग को सन्मार्ग दिखाते।
विशद भाव से महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।। 7।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतमण्डलविधाने श्री सुपार्श्व जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि० स्वाहा।। ७।।

चाँद समान 'चन्द्र प्रभु' गाए, शीतलता जग में बिखराए।
विशद भाव से महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।। 8।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतमण्डलविधाने श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि० स्वाहा।। ८।।

सुविधि नाथ जी 'सुविधि' जगाए, जग को मुक्ती मार्ग दिखाए।
विशद भाव से महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।। 9।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतमण्डलविधाने श्री सुविधि जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि० स्वाहा।। ९।।

जग को 'शीतल' करने वाले, शीतल नाथ जी हुए निराले।
विशद भाव से महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।। 10।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतमण्डलविधाने श्री शीतल जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि० स्वाहा।। १०।।

जिन 'श्रेयान्स' श्रेय के धारी, तीन लोक में मंगलकारी।
विशद भाव से महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।। 11।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतमण्डलविधाने श्री श्रेयान्स जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि० स्वाहा।। ११।।

'वासुपूज्य' हैं पूज्य हमारे, जग जीवों के बने सहारे।
विशद भाव से महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।। 12।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतमण्डलविधाने श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि० स्वाहा।। १२।।

विमल गुणों के धारी गाए, 'विमलनाथ' जिनवर कहलाए।
विशद भाव से महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।। 13।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतमण्डलविधाने श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि० स्वाहा।। १३।।

अनन्त चतुष्टय के हैं धारी, 'जिनानन्त' की महिमा न्यारी।
विशद भाव से महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।। 14।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतमण्डलविधाने श्री जिनानन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि० स्वाहा।। १४।।

'धर्मनाथ' तीर्थंकर जानो, विशद धर्म के धारी मानो।
विशद भाव से महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।। 15।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतमण्डलविधाने श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि० स्वाहा।। १५।।

(सखी छन्द)

प्रभु 'शांतिनाथ' कहलाए, शांती जीवन में पाए।
हे विशद गुणों के धारी, हम पूजा करें तुम्हारी।। 16।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतमण्डलविधाने श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि० स्वाहा।। १६।।

श्री 'कुन्थुनाथ' जिन स्वामी, तुम हुए मोक्ष पथ गामी।
हे विशद गुणों के धारी, हम पूजा करें तुम्हारी।। 17।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतमण्डलविधाने श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि० स्वाहा।। १७।।

जिन 'अरहनाथ' कहलाते, इस जग में पूजे जाते।
हे विशद गुणों के धारी, हम पूजा करें तुम्हारी।। 18।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतमण्डलविधाने श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि० स्वाहा।। १८।।

प्रभु 'मल्लिनाथ' जग जेता, कर्मों के आप विजेता।
हे विशद गुणों के धारी, हम पूजा करें तुम्हारी।। 19।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतमण्डलविधाने श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि० स्वाहा।। १९।।

हे 'मुनिसुव्रत' व्रतधारी, तुम बने श्रेष्ठ अनगारी।
हे विशद गुणों के धारी, हम पूजा करें तुम्हारी।। 20।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतमण्डलविधाने श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि० स्वाहा।। २०।।

हे 'नमि जिनवर' अविकारी, पावन संयम के धारी।
हे विशद गुणों के धारी, हम पूजा करें तुम्हारी।। 21।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतमण्डलविधाने श्री नमि जिनवर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि० स्वाहा।। २१।।

प्रभु 'नेमिनाथ' कहलाए, करुणा की धार बहाए।
हे विशद गुणों के धारी, हम पूजा करें तुम्हारी।। 22।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतमण्डलविधाने श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि० स्वाहा।। २२।।

हैं उपसर्गों के जेता, 'प्रभु पारस' कर्म विजेता।
हे विशद गुणों के धारी, हम पूजा करें तुम्हारी।। 23।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतमण्डलविधाने श्री प्रभु पारस जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि० स्वाहा।। २३।।

हे 'वर्धमान' गुणधारी, जग जन के करुणाधारी।
हे विशद गुणों के धारी, हम पूजा करें तुम्हारी।। 24।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतमण्डलविधाने श्री वर्धमान जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि० स्वाहा।। २४।।

पूर्णार्घ्यं - तीर्थंकर चौबिस गाए, जो शिव पदवी को पाए।
हे विशद गुणों के धारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतमण्डलविधाने श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

प्रथम वलय: प्रथम कोष्ठ (षट् कर्म फल)

(अर्घावली)

दोहा - जिन पूजादिक जानिए, श्रावक के षट्कर्म।
पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, पाने निज का धर्म।।

अथ प्रथम कोष्ठोपरि पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्

(ज्ञानोदय छन्द)

वीतराग सर्वज्ञ हितैसी, छियालिस गुण के धारी हैं।
दिव्य देशना देने वाले, जग जन के हितकारी हैं।।
षट् आवश्यक का पालन कर, निज कर्त्तव्य निभाएँगे।
संयम धारण कर अनुक्रम से, मोक्ष महल में जाऐंगे।। 1।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतमण्डलविधाने सर्वज्ञदेवाय अर्घ्यं नि० स्वाहा।। १।।

आचार्योपाध्याय सर्व साधुजी, मंगलमय अविकारी हैं।
रत्नत्रय का पालन करते, पूर्ण रूप अविकारी हैं।।
षट् आवश्यक का पालन कर, निज कर्त्तव्य निभाएँगे।
संयम धारण कर अनुक्रम से, मोक्ष महल में जाऐंगे।। 2।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतमण्डलविधाने आचार्योपाध्यायादिगुरुभ्योर्घ्यं नि० स्वाहा।। २।।

वाचन पृच्छन अनुप्रेक्षाअरु, आम्नाय है धर्मोपदेश।
स्वाध्यायश्रावक का पावन, बतलाया कर्त्तव्य विशेष।।

षट् आवश्यक का पालन कर, निज कर्त्तव्य निभाएँगे।
संयम धारण कर अनुक्रम से, मोक्ष महल में जाएँगे।। 3।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतमण्डलविधाने पंचभेद-स्वाध्यायानामकर्मप्राप्तयेभ्योर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३।।

प्राणी संयम पालन करके, करना मन इन्द्रिय का रोध।
यही भावना रहे हमारी, जागे निज अन्तर में बोध।।
षट् आवश्यक का पालन कर, निज कर्त्तव्य निभाएँगे।
संयम धारण कर अनुक्रम से, मोक्ष महल में जाएँगे।। 4।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतमण्डलविधाने द्विविधसंयमफल प्राप्तयेऽर्घ्यं नि० स्वाहा।। ४।।

बाह्य सुतप के भेद कहे छह, अभ्यन्तर के भी छह जान।
कर्म निर्जरा होय सुतप से, ऐसा कहतें है भगवान।।
षट् आवश्यक का पालन कर, निज कर्त्तव्य निभाएँगे।
संयम धारण कर अनुक्रम से, मोक्ष महल में जाएँगे।। 5।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतमण्डलविधाने अनशनादितपश्चरणफलप्राप्तयेऽर्घ्यं नि० स्वाहा।। ५।।

आहारौषधि अभय ज्ञान ये, दान बताया चार प्रकार।
स्व पर के उपकारी बनकर, प्राणी करते निज उद्धार।।
षट् आवश्यक का पालन कर, निज कर्त्तव्य निभाएँगे।
संयम धारण कर अनुक्रम से, मोक्ष महल में जाएँगे।। 6।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतमण्डलविधाने चतुर्विधदानफलप्राप्तये अर्घ्यं नि० स्वाहा।। ६।।

पूर्णार्घ्य

जिन पूजा गुरु की उपासना, स्वाध्याय संयम तप दान।
षट् आवश्यक पालन करके, प्राणी करते निज कल्याण।।
षट् आवश्यक का पालन कर, निज कर्त्तव्य निभाएँगे।
संयम धारण कर अनुक्रम से, मोक्ष महल में जाएँगे।। ७।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतमण्डलविधाने षट्कर्मफलप्राप्तये पूर्णार्घ्यं नि० स्वाहा।। ७।।

द्वितीय कोष्ठ (षट् प्रकार पापारम्भत्याग)

(अर्घावली)

दोहा - पापारम्भ के जानिए, कूटनादि छह भेद।
इनको तजना है विशद, जिनसे होता खेद।।

(अथ षट् पापादि त्याग द्वितिय कोष्ठानामुपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(मोजियादाम छन्द)

कूटकर औषधि अन्न अपार, रखा ना जिसमें यत्नाचार।
ओखली शिल बट्टा के शोध, हेतु अब जागे मन में बोध।।1।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतविधाने अन्नादिकुट्टनसम्बन्धि पापत्यागायार्घ्यं नि० स्वाहा।। १।।

पीस औषधि अन्नादि अपार, किया कई जीवों का संहार।
किए ना चक्की आदिक शोध, जागे मन में मेरे अब बोध।।2।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतविधाने अन्नादिपेषणसम्बन्धि पापत्यागायार्घ्यं नि० स्वाहा।। २।।

अन्न जल औषधि को पकवाय, उष्ण में शीतल दिया मिलाय।
करो भाई अब यत्नाचार, हुआ कई जीवों का संहार।।3।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतविधाने पांचकर्मसम्बन्धि पापत्यागायार्घ्यं नि० स्वाहा।। ३।।

सरोवर कूप नदी में जीव, न्हवन में होवे घात अतीव।
करो भाई अब यत्नाचार, हुआ, कई जीवों का संहार।।4।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतविधाने स्नानमज्जनसम्बन्धि पापत्यागायार्घ्यं नि० स्वाहा।। ४।।

किया झाड़ू पोंछा का काम, जीव तब उसमें मरें तमाम।
करो भाई अब यत्नाचार, हुआ, कई जीवों का संहार।।5।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतविधाने भूमिसम्मार्जनसम्बन्धि पापत्यागायार्घ्यं नि० स्वाहा।। ५।।

असि मसि कृषि करके व्यापार, किया कई जीवों का संहार।
करो भाई अब यत्नाचार, हुआ, कई जीवों का संहार।।६।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतविधाने व्यापारादिसावद्यकार्ये द्रव्योपार्जन पापत्यागायार्घ्यं नि० स्वाहा।। ६।।

(पूर्णार्घ्य)

किए कूटन आदिक षट्कर्म, नहीं पालन कीन्हा सद्धर्म।
करो सद्विधि षट् कर्म निवार, करो जिन धर्म विशद स्वीकार।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतविधाने षट्पापारंभसम्बन्धि पापत्यागायपूर्णार्घ्यं नि० स्वाहा।।

तृतीय कोष्ठ (षट् आवश्यक धारक)

(अर्घावली)

दोहा - षट् आवश्यक पालकर, पाते हैं शिवधाम।
ऐसे श्री मुनिवर चरण, बारम्बार प्रणाम।।

(अथ षट् आवश्यक तृतीय कोष्ठानुपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(चौवोला छन्द)

समता भाव सभी जीवों पर, निज समान सबको माने।
संयम तप की शुभम् भावना, राग द्वेष से अंजाने।।
आर्त रोद्र के ध्यान हीन शुभ, मुनिवर समताधारी हैं।
'विशद' भाव से वन्दन करते, पूर्ण रूप अविकारी हैं।।1।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतविधाने समतावश्यकधारकेभ्य: मुनीश्वरेभ्योर्घ्यं नि० स्वाहा।। १।।

अर्हत् सिद्धाचार्यों की जो, नित्य वंदना करते हैं।
पंच पाप से रहित मुनीश्वर, चरणों में सिर धरते हैं।।
विनयवान शुभ सौम्य सरल अति, मुनिवर समताधारी हैं।
'विशद' भाव से वन्दन करते, पूर्ण रूप अविकारी हैं।।2।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतविधाने वंदनकर्मधारकेभ्य: मुनीश्वरेभ्योर्घ्यं नि० स्वाहा।। २।।

जो अर्हन्त सिद्ध की स्तुति, भक्तिभाव से नित्य करें।
करते हैं गुणगान भाव से, मन के सारे दोष हरें।।
विनयवान शुभ सौम्य सरल अति, मुनिवर समताधारी हैं।
'विशद' भाव से वन्दन करते, पूर्ण रूप अविकारी हैं।।3।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतविधाने स्तुतिनामावश्यकधारकेभ्योर्घ्यं नि० स्वाहा।। ३।।

दोष लगे मन, वच, तन कोई, करने को उनका क्षयकार।
प्रतिक्रमण से भाव शुद्धिकर, आलोचन निज उर में धार।।
विनयवान शुभ सौम्य सरल अति, मुनिवर समताधारी हैं।
'विशद' भाव से वन्दन करते, पूर्ण रूप अविकारी हैं।।4।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतविधाने प्रतिक्रमणनामावश्यकधारकेभ्योर्घ्यं नि० स्वाहा।। ४।।

स्व पर ज्ञान जगाने हेतू, अमृत वत जानो स्वाध्याय।
भेद ज्ञान के द्वारा प्राणी, भाव सहित निज आतम ध्याय।।

विनयवान शुभ सौम्य सरल अति, मुनिवर समताधारी हैं।
'विशद' भाव से वन्दन करते, पूर्ण रूप अविकारी हैं।।5।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतविधाने स्वाध्यायनामावश्यकधारकेभ्योर्घ्यं नि० स्वाहा।। ५।।

गेह देह से नेह छोड़कर, स्थिर होकर करते जाप।
शांत भाव से कष्ट सहें सब, त्याग करें जो सारे पाप।।
विनयवान शुभ सौम्य सरल अति, मुनिवर समताधारी हैं।
'विशद' भाव से वन्दन करते, पूर्ण रूप अविकारी हैं।।6।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतविधाने कायोत्सर्गनामावश्यकधारकेभ्योर्घ्यं नि० स्वाहा।। ६।।

पूर्णार्घ्य

समता और वन्दना स्तुति, प्रतिक्रमण जानो स्वाध्याय।
कायोत्सर्ग के धारी साधू, षट् आवश्यक धर कहलाए।।
विनयवान शुभ सौम्य सरल अति, मुनिवर समताधारी हैं।
'विशद' भाव से वन्दन करते, पूर्ण रूप अविकारी हैं।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतविधाने षडावश्यकधारक मुनीश्वरेभ्य: पूर्णार्घ्यं नि० स्वाहा।।

चतुर्थ कोष्ठ (बाह्य षट् तप धारक)

(अर्घावली)

दोहा - बाह्य सुतप छह जानिए, पालें जो अनगार।
अभ्यन्तर के हेतु यह, भवदधि तारण हार।।

(षट् बाह्य तप चतुर्थ कोष्ठानामुपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(चाल छन्द)

जो त्याग करें आहारा, उनने अनशन तप धारा।
हे पावन तप के धारी!, हम पूजा करें तुम्हारी।।1।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतविधाने अनशनतपधारक मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं नि० स्वाहा।। १।।

तप ऊनोदर के धारी, होते हैं कम आहारी।
हे पावन तप के धारी!, हम पूजा करें तुम्हारी।।2।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतविधाने ऊनोदरतपधारकमुनिवरेभ्यो अर्घ्यं नि० स्वाहा।। २।।

तप व्रत परिसंख्यान के धारी, संकल्प करें अनगारी।
हे पावन तप के धारी!, हम पूजा करें तुम्हारी।।3।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतविधाने वृत्तिपरिसंख्यानतपधारक मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं नि० स्वाहा।। ३।।

रस त्याग सुतप के धारी, रस छोड़े हो अविकारी।
हे पावन तप के धारी!, हम पूजा करें तुम्हारी।।4।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतविधाने रसपरित्यागतपधारक मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं नि० स्वाहा।। ४।।

तप विविक्त शैय्यासनधारी, हों अनाशक्त अनगारी।
हे पावन तप के धारी!, हम पूजा करें तुम्हारी।।5।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतविधाने विविक्तशय्यासानधारक मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं नि० स्वाहा।। ५।।

तप काय क्लेश के धारी, तजते ममत्व गुणधारी।
हे पावन तप के धारी!, हम पूजा करें तुम्हारी।।6।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतविधाने कायक्लेशतपधारक मुनीश्वरेभ्योर्घ्यं नि० स्वाहा।। ६।।

''पूर्णार्घ्यं''

तप अनशनादि छह गाए, जो बाह्य सुतप कहलाए।
हे पावन तप के धारी!, हम पूजा करें तुम्हारी।।7।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतविधाने षट्विधिबाह्यतपधारक मुनिवरेभ्यो पूर्णार्घ्यं नि० स्वाहा।। ७।।

पञ्चम कोष्ठ (षट् अभ्यन्तर तप धारक)

दोहा - प्रायश्चित आदिक सुतप छह, के धारी जिनसंत।
कर्म निर्जरा कर विशद, बनते हैं अरहंत।।

(अथ षट् अभ्यन्तर तप पंचम कोष्ठानामुपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(सखी छन्द)

हैं प्रायश्चित जो पाते, वह अपने दोष नशाते।
तप करते संयम धारी, जो करें निर्जरा भारी।। 1।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतविधाने प्रायश्चित्ततपधारक यतीश्वरेभ्योर्घ्यं नि० स्वाहा।। १।।

हैं विनय सुतप के धारी, इस जग में मंगलकारी।
तप करते संयम धारी, जो करें निर्जरा भारी।।2।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतविधाने विनयतपधारक यतीश्वरेभ्योर्घ्यं नि० स्वाहा।। २।।

तप वैय्यावृती धारें, वे संयम रतन सम्हारें।
तप करते संयम धारी, जो करें निर्जरा भारी।।3।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतविधाने वैयावृत्यतपधारक यतीश्वरेभ्योर्घ्यं नि० स्वाहा।। ३।।

तप स्वाध्याय के धारी, चिन्तन करते अनगारी।
तप करते संयम धारी, जो करें निर्जरा भारी।।4।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतविधाने स्वाध्यायतपधारक यतीश्वरेभ्योर्घ्यं नि० स्वाहा।। ४।।

व्युत्सर्ग सुतप जो पावें, वे तन से नेह घटावें।
तप करते संयम धारी, जो करें निर्जरा भारी।।5।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतविधाने व्युत्सर्गतपधारक यतीश्वरेभ्योर्घ्यं नि० स्वाहा।। ५।।

हैं ध्यान सुतप के धारी, चिन्तारोधी अविकारी।
तप करते संयम धारी, जो करें निर्जरा भारी।।6।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतविधाने ध्यानतपधारक मुनीश्वरेभ्योर्घ्यं नि० स्वाहा।। ६।।

पूर्णार्घ्यं

तप अन्तरंग छह गाए, जो प्राश्चित्तादि कहाए।
तप करते संयम धारी, जो करें निर्जरा भारी।।7।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतविधाने प्रायश्चित्तादि षट्अभ्यन्तरतपधारक मुनीश्वरेभ्य: पूर्णार्घ्यं नि.स्वा.।। ७।।

षष्ठम् कोष्ठ (लेश्या परिहार)

दोहा - छह लेश्या कृष्णादि का, करते जो परिहार।
अशुभ छोड़ शुभ ध्यान कर, होते हैं भव पार।।

(अथ षट् लेश्या षष्ठम कोष्ठानामुपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(चौपाई)

तीव्र क्रोध का भाव जगाय, लड़े वैर मन में उपजाय।
कृष्ण लेश्या है दुखकार, त्याग किए हो सौख्य अपार।। 1।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतविधाने कृष्णलेश्यारूपपरिणामत्यागकारक सिद्धेभ्य: अर्घ्यं नि.स्वा.।। १।।

मान कपट दुर्भाव बनाय, विषय भोग की चाह लगाय।
नील लेश्या है दुखकार, त्याग किए हो सौख्य अपार।। 2।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतविधाने नीललेश्यारूप-परिणामत्यागकारक सिद्धेभ्य: अर्घ्यं नि.स्वा.।। २।।

शोकाकुल पर निन्दावान, मान बढ़ाई भय दुख दान।
कापोत लेश्या है दुखकार, त्याग किए हो सौख्य अपार।। 3।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतविधाने कापोतलेश्यारूप-परिणामत्यागकारक सिद्धेभ्य: अर्घ्यं नि.स्वा.।। ३।।

समदर्शी शुभ भाव बनाय, दया दान मृदु भाव जगाय।
लेश्या पीत वान शुभकार, त्याग किए हो सौख्य अपार।। 4।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतविधाने पीतलेश्यारूप-परिणामत्यागकारक सिद्धेभ्य: अर्घ्यं नि.स्वा.।। ४।।

त्यागी भद्र शील स्वभाव, इष्टानिष्ट में हो समभाव।
पदम लेश्या धर शुभकार, त्याग किए हो सौख्य अपार।। 5।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतविधाने पद्मलेश्यारूप-परिणामत्यागकारक सिद्धेभ्य: अर्घ्यं नि.स्वा.।। ५।।

राग रहित हो समता वान, त्यागे करता नहीं निदान।
शुक्ल लेश्या धर शुभकार, त्याग किए हो सौख्य अपार।। 6।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतविधाने शुक्ललेश्यारूप-परिणामत्यागकारक सिद्धेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ६।।

पूर्णार्घ्य - कृष्ण नील कापोत सुजान, पीत पद्म अरु शुक्ल महान।
द्रव्य भाव मय लेश्या जान, त्यागी पावें पद निर्वाण।। 7।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतविधाने कृष्णादिषट्लेश्यारूप-परिणामत्यागकारक सिद्धेभ्य: पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ७।।

सप्तम कोष्ठ (षट् काय जीव रक्षण)

दोहा - भू जल अग्नी वायु तरू, त्रस गाये षट् काय।
इनकी रक्षा का विशद, करना सतत् उपाय।।

(अथ षट् काय-जीव रक्षण सप्तम कोष्ठानामुपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(केसरी छन्द)

पर्वत खानादिक खुदवाए, पृथ्वी कायिक जीव मराए।
अब रक्षा का भाव जगाएँ, जीवों पे करुणा बरसाएँ।। 1।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतविधाने पृथिवीकायिकजीव रक्षक जिनेन्द्रदेवेभ्य: अर्घ्यं नि.स्वा.।। १।।

सरिता ताल में चीर धुवाए, जल मंथन कर जीव मराए।
अब रक्षा का भाव जगाएँ, जीवों पे करुणा बरसाएँ।। 2।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतविधाने जलकायिकजीव रक्षक जिनेन्द्रदेवेभ्य: अर्घ्यं नि.स्वा.।। २।।

जल मिट्टी से आग बुझाए, अग्नि जीव का घात कराए।
अब रक्षा का भाव जगाएँ, जीवों पे करुणा बरसाएँ।। 3।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतविधाने अग्निकायिकजीव रक्षक जिनेन्द्रदेवेभ्य: अर्घ्यं नि. स्वाहा।। ३।।

पंखादिक से पवन चलाए, वायु कायिक जीव मराए।
अब रक्षा का भाव जगाएँ, जीवों पे करुणा बरसाएँ।। 4।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतविधाने पवनकायिकजीव रक्षक जिनेन्द्रदेवेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ४।।

मूल फूल फल वृक्ष कटाए, कंदादिक भी रांध जलाए।
वनस्पति के जीव मराए, करुणा भाव हृदय में आए।। 5।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतविधाने वनस्पतिकायिकजीव रक्षक जिनेन्द्रदेवेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ५।।

दो त्रय चउ पंचेन्द्रिय सैनी, त्रस मारे कई जीव असैनी।
अब रक्षा का भाव जगाएँ, जीवों पे करुणा बरसाएँ।। 6।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतविधाने त्रसकायिकजीव रक्षक जिनेन्द्रदेवेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ६।।

पूर्णार्घ्य - पञ्च स्थावर अरु त्रस गाए, षट् कायिक ये जीव कहाए।
अब रक्षा का भाव जगाएँ, जीवों पे करुणा बरसाएँ।। 7।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतविधाने षट्कायिकजीव संरक्षक जिनेन्द्रदेवेभ्य: पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ७।।

अष्टम कोष्ठ (षट् द्रव्य परिचायक जिन)

दोहा - जीवादिक षट् द्रव्य से, भरा हुआ है लोक।
उनके परिचालक प्रभो!, जिन पद देते ढोक।।

(अथ जीवादि षट् द्रव्याणां अष्टम कोष्ठानामुपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(दोहा)

भेद कहे दो जीव के, संसारी अरु मुक्त।
जीव का लक्षण चेतना, गुण पर्यायों युत।। 1।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतविधाने ज्ञानादिलक्षणयुक्तजीवद्रव्यपरिचायक जिनेन्द्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १।।

रूप गंध स्पर्श रस, पुद्गल के गुण चार।
हैं विशेष गुण बीस दो, अणु स्कन्ध शुभकार।। 2।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतविधाने रूपादिलक्षणयुक्त पुद्गलद्रव्यपरिचायक जिनेन्द्रेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। २।।

पुद्गल जीवों के लिए, चलने में सहकारि।
ज्यों जल मछली के लिए, धर्म द्रव्य त्यों धारि।। 3।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतविधाने गमनसहकारी द्रव्य परिचायक जिनेन्द्रेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३।।

पुद्गल जीवों को रहा, रुकने में सहकारि।
पथिकों को छाया यथा, त्यों अधर्म को धारि।। 4।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतविधाने स्थितिसहकारीअधर्मद्रव्य परिचायक जिनेन्द्रेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ४।।

सबको जो अवकाश दे, कहलाए आकाश।
लोकालोक विभाग दो, निश्चय इक है खास।। 5।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतविधाने अवकाशदानयोग्यद्रव्य परिचायक जिनेन्द्रेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ५।।

परिवर्तन में द्रव्य के, सहकारी है काल।
निश्चय अरु व्यवहार दो, भेद बताए त्रिकाल।।6।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतविधाने द्रव्य परिवर्तनस्वरूप कालद्रव्य परिचायक जिनेन्द्रेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ६।।

पूर्णार्घ्य

पुद्गल जीव अधर्म अरु, धर्म काल आकाश।
अस्तिकाय हैं काल बिन, द्रव्य कहे जो खास।। 7।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतविधाने षट्द्रव्यपरिचायक जिनेन्द्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ७।।

नवम् कोष्ठ (षट् अनायतन त्याग)

दोहा - षट् अनायतन धर्म के, नहीं हैं जो स्थान।
उनको त्यागो शीघ्र ही, धारो सत् श्रद्धान।।

(अथ षट् अनायतन नवम कोष्ठानामुपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(छन्द जोगीरासा)

व्यसनादिक सेवी मायावी, रागी द्वेषी प्राणी।
खोटे देव कहाते हैं ये, कहती है जिनवाणी।।

षट् अनायतन दुख के कारण, इनको त्यागो भाई।
सम्यक् दर्शन धारो उर में, जो है शिव सुखदायी।। 1।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतविधाने मिथ्यात्वदोषपरिहारार्थ-कुदेव-सेवा दोषनिवारणेभ्य: सम्यग्दर्शनेभ्योर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १।।

मिथ्यादिक एकान्त प्ररूपी, हिंसादिक का पोषी।
आदि अन्त विरोधी आगम, कहलाता है दोषी।।
षट् अनायतन दुख के कारण, इनको त्यागो भाई।
सम्यक् दर्शन धारो उर में, जो है शिव सुखदायी।। 2।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतविधाने मिथ्यात्वदोषपरिहारार्थकुशास्त्र-दोषनिवारणेभ्य: सम्यग्दर्शनेभ्योर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। २।।

रागी द्वेषी मिथ्या भाषी, अहंकार ममकारी।
कुत्सित भेषी मिथ्याभिलाषी, साधू हैं सागारी।।
षट् अनायतन दुख के कारण, इनको त्यागो भाई।
सम्यक् दर्शन धारो उर में, जो है शिव सुखदायी।। 3।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतविधाने मिथ्यात्वदोषपरिहारार्थकुगुरू-दोषनिवारणेभ्य: सम्यग्दर्शनेभ्योर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३।।

खोटे देव पूजने वाले, हों उनके श्रद्धानी।
सम्यक् दर्शन मलिन करें वे, होकर के अज्ञानी।।
षट् अनायतन दुख के कारण, इनको त्यागो भाई।
सम्यक् दर्शन धारो उर में, जो है शिव सुखदायी।। 4।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतविधाने मिथ्यात्वदोषपरिहारार्थकुदेवपूजन-दोषनिवारणेभ्य: सम्यग्दर्शनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ४।।

खोटे आगम के अभ्यासी, उसमें श्रद्धा धारी।
मिथ्या आगम सेवी प्राणी, होंय दीर्घ संसारी।।
षट् अनायतन दुख के कारण, इनको त्यागो भाई।
सम्यक् दर्शन धारो उर में, जो है शिव सुखदायी।। 5।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतविधाने मिथ्यात्वदोषपरिहारार्थकुआगमसेवी-दोषनिवारणेभ्य: सम्यग्दर्शनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ५।।

कुत्सित भेषी गुरु के सेवी, खोटा धर्म बढ़ावें।
उपल नाव सम भव सिन्धू में, डूबे स्वयं डुबावे।।
षट् अनायतन दुख के कारण, इनको त्यागो भाई।
सम्यक् दर्शन धारो उर में, जो है शिव सुखदायी।। 6।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतविधाने मिथ्यात्वदोषपरिहारार्थकुगुरूसेवी दोषनिवारणेभ्य: सम्यग्दर्शनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ६।।

पूर्णार्घ्य

खोटे देवागम गुरु खोटे, सेवी इनके सारे।
ये पूजा सम्मान योग्य ना, कोई रहे हमारे।।
षट् अनायतन दुख के कारण, इनको त्यागो भाई।
सम्यक् दर्शन धारो उर में, जो है शिव सुखदायी।। 7।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतविधाने मिथ्यात्वदोषपरिहारार्थषट्अनायतन दोषनिवारणेभ्य: सम्यग्दर्शनेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ७।।

दशम कोष्ठ (षट् रस दोष निवारणार्थ)

दोहा - सर्व इन्द्रियों में प्रबल, रसना अरु स्पर्श।
इनके विजयी के हृदय, जागे अनुपम हर्ष।।

(दशम षट् रस त्याग दशम कोष्ठानामुपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(पाइता छन्द)

मीठा रसना को भावे, उसमें बहु राग लगावे।
जो हैं रसना जयकारी, वे पूज्य कहे अनगारी।। 1।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतविधाने मिष्टरसोत्पन्नदोषनिवारकेभ्य: मुनीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। १।।

रसना घृत की अनुरागी, जो बनी है उसकी रागी।
जो हैं रसना जयकारी, वे पूज्य कहे अनगारी।। 2।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतविधाने घृतरसोत्पन्नदोषनिवारकेभ्य: मुनीश्वरेभ्यो अर्घ्यं नि.स्वा.।। २।।

कोइ दूध में राग बढ़ावे, जो पेय श्रेष्ठ कहलावे।
जो हैं रसना जयकारी, वे पूज्य कहे अनगारी।। 3।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतविधाने दुग्धरसोत्पन्नदोषनिवारकेभ्य: मुनीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ३।।

रसना की चाहत जानो, खट्टादधि चाहे मानो।
जो हैं रसना जयकारी, वे पूज्य कहे अनगारी।। 4।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतविधाने दधिरसोत्पन्नदोषनिवारकेभ्य: मुनीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ४।।

जो तेल में वस्तु पकाई, रसना चाहे वह भाई।
जो हैं रसना जयकारी, वे पूज्य कहे अनगारी।। 5।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतविधाने तैलरसोत्पन्नदोषनिवारकेभ्य: मुनीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ५।।

षट् रस में नमक भी आए, इस बिन भोजन ना भाए।
जो हैं रसना जयकारी, वे पूज्य कहे अनगारी।। 6।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतविधाने लवणोत्पन्नदोषनिवारकेभ्य: मुनीश्वरेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।। ६।।

पूर्णार्घ्य

मीठा घृत दूध कहाए, दधि तेल नमक छह गए।
छह रस के हैं परिहारी, वे पूज्य कहे अनगारी।। 7।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतविधाने षट्रसोत्पन्नदोषनिवारकेभ्य: मुनीश्वरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।। ७।।

महाअर्घ्य

है सुगन्ध दशमी व्रत पावन, जिसमें तीर्थंकर चौबीस।
अर्घ्य चढ़ाते जिनके चरणों, जो हैं जगती पति जगदीश।।
श्रावक के षट् कर्म पाप तज, मुनियों के हैं षट् कर्त्तव्य।
बाह्य सुतप छह अभ्यन्तर भी षट्, लेश्या तजना हे भव्य!।।
रक्षा कर षट् काय जीव की, षट् द्रव्यों का पाना ज्ञान।
षट् अनायतन तज के षट्रस, संयम धर पाना निर्वाण।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतविधाने श्री चतुर्विंशति तीर्थंकराय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

जयमाला

दोहा - तीर्थंकर के चरण में, करते नमन त्रिकाल।
व्रत सुगन्ध दशमी विशद, की गाते जयमाल।।

(शम्भु छन्द)

जिन पूजा है पुण्य प्रदायक, गुरु अर्चा सुख का साधन।
स्वाध्याय है ज्ञान प्रकाशक, संयम मुक्ती का कारण।।
सम्यक् तप से कर्म नाश हों, दान से हो स्व पर उपकार।
पाप होय अन्नादिक कूटे, चक्की पीसे होय अपार।। 1।।
पाप होय भोजन पाचन में, सरवर न्हवन में होय विशेष।
झाड़ू और बुहारी में हों, हों व्यापार में पाप हमेश।।
समताधर सामायिक करिए, वन्दन होवे विशद त्रिकाल।
नाना स्तुति जिनवर की कर, प्रतिक्रमण हो तीनों काल।। 2।।
स्वाध्याय से ज्ञान वृद्धि हो, कायोत्सर्ग से घटता राग।
तप अनशन ऊनोदर धारण, कर व्रत परिसंख्या रस त्याग।
प्रायश्चित्त अरु विनय सुतप धर, वैय्यावृत्ती कर स्वाध्याय।
कायोत्सर्ग ध्यान तप लेश्या, कृष्ण नील कापोत कहाय।। 3।।
पीत पद्म अरु शुक्ल लेश्या, धारी निर्मल भाव जगाय।
पृथ्वी जल अग्नी वायु तरु, त्रस प्राणी होते षट् काय।।
जीव द्रव्य चेतन पुद्गल जड़, धर्माधर्म रहा आकाश।
काल द्रव्य बिन अस्तिकाय छह, जैनागम से जानो खास।। 4।।
जो कुदेव कुगुरु कु आगम, त्रय सेवक इनके पहिचान।
छह अनायतन से होती है, सत् सम्यक्त्व गुणों की हान।।
रसना के छह विषय बताए, मीठा घृत रस दूध प्रधान।
दधी तेल लवणादिक रस छह, त्यागी जीव बने गुणवान।। 5।।
जयमाला गाके उद्यापन, का बतलाते यहाँ विधान।
धूप घटों में धूप दशांगी, श्रेष्ठ खिपाएँ दश स्थान।।
दश स्तोत्र पढ़े मन वच तन, करें दशम अभिषेक महान।
दश प्रकार उपकरण दान कर, पाठक गण को पुस्तक दान।। 6।।
दे आहार दान ऋषियों को, यथा शक्ति कर धर्म प्रचार।
पुण्यार्जन होता है अनुपम, व्रत करने से मंगलकार।।

दुर्गति का हो नाश सुगति में, प्राणी का हो जाय गमन।
व्रत सुगन्ध दशमी यह पावन, अतिशय सुख का रहा निधान।। 7।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदशमीव्रतविधाने दशकोष्ठानामुपरि श्री चतुर्विंशति तीर्थंकराय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''सोरठा''

उदित कर्म क्षय होय, नये कर्मों का रोध हो।
सद् श्रद्धानी होय, जागे उर में बोधि भी।।
किए 'विशद' उपवास, भादव शुक्ला दशें का।
होवे मुक्ती वास, लोकालोक प्रकाश हो।।

(इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्)

।। ॐ ह्रीं श्रीं ह्रां चतुर्विंशति-जिनेभ्यो नमः।।

आरती

(तर्जः- भक्ति बेकरार है.....)

सिद्धों का दरबार है, अतिशय मंगलकार है।
कर्म दहन की आरति करता, भक्तों का परिवार है।।
तत्वों पर श्रद्धा के धारी, सम्यकदर्शन पाते हैं।
सम्यक् श्रद्धा पाके प्राणी, भेद ज्ञान प्रगटाते हैं।। 1।।
मोक्षमार्ग में सम्यक् चारित, गाया शुभ आधार हैं-2।
रत्नत्रय के धारी मुनिवर, उत्तम संयम पाते हैं।।
उत्तम तप को धारण करके, कर्म निर्जरा पाते हैं।
कर्म दहन कर सम्यक् तप से, हो जाते अविकार हैं-2।। 2।।
शुक्ल ध्यान के द्वारा मुनिवर, क्षायिक श्रेणी पर चढ़ते।
मोक्षमार्ग के राही बनकर, मुक्ती के पथ पर बढ़ते।।
कर्म दहन करने वाले हैं, प्रभु जग में अपरम्पार हैं-2।। 3।।
कर्म दहन का भाव हृदय मे, जो भी जीव जगाते हैं।
अग्नि कुण्ड में धूप दशांगी, सुरभित 'विशद' जलाते हैं।।
श्री जिन की अर्चा करने से, हो जाता उद्धार है-2।। 4।।
देव-शास्त्र गुरु भक्त सभी मिल, पावन पर्व मनाते हैं।
खेकर धूप सुगन्ध दशे को, मन मे बहु हर्षाते हैं।।
विशद धर्मे का पालन करना, नर जीवन का सार है।। 5।।

लघु कर्म दहन विधान पूजा

स्थापना (दोहा)

वर्ग सहित दल कमल वसु, सन्धी तत्त्वों वान।
स्थापित ह्रीं कार कर, ब्रह्म स्वर वेष्टित मान।।
अन्त पत्र की सन्धि में, ॐकार का स्थान।
ह्रीं कार युत मंत्र सब, सर्व सिद्धि मय जान।।
बड़भागी वे लोक में, ध्यावें जो कर ध्यान।
काल रूप गजराज को, हैं जो सिंह समान।।

ॐ ह्रीं कर्मदहन प्राप्त श्री सिद्धपरमेष्ठीसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं कर्मदहन प्राप्त श्री सिद्धपरमेष्ठीसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं कर्मदहन प्राप्त श्री सिद्धपरमेष्ठीसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(चौबोला छन्द)

जल से निर्मल हैं गुण मेरे, जिनकी अब याद सताई है।
निर्मलता उपमातीत अहः, पाने की बारी आई है।।
जो अष्ट कर्म का नाश करें, वे सिद्धों का पद पाते हैं।
शिव पथ के राही बन जाते, जो जिन पद शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो जन्मजरामृत्यु (ज्ञानावरणीय कर्म) विनाशनाय जलं।

अब शीतलता की चाह नहीं, निज शीतल गुण प्रगटाऐंगे।
हम भाव बनाए निर्मलतम, चन्दन यह श्रेष्ठ चढ़ाऐंगे।।
जो अष्ट कर्म का नाश करें, वे सिद्धों का पद पाते हैं।
शिव पथ के राही बन जाते, जो जिन पद शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो संसारताप (दर्शनावरणीय कर्म) विनाशनाय चन्दनं ।

अक्षय अखण्ड मेरा स्वरूप, खण्डित ना खंजर कर पाए।
पाने अखण्ड वह पद अनुपम, यह चरण चढ़ाने हम आए।।
जो अष्ट कर्म का नाश करें, वे सिद्धों का पद पाते हैं।
शिव पथ के राही बन जाते, जो जिन पद शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अक्षय पद प्राप्ताय (मोहनीय कर्म) विनाशनाय अक्षतं।

निज गुण से सुरभित है चेतन, रागादि विकार ना रह पाएँ।
वे काम रोग का नाश करें, जो पुष्प ले पूजा को आएँ।।
जो अष्ट कर्म का नाश करें, वे सिद्धों का पद पाते हैं।
शिव पथ के राही बन जाते, जो जिन पद शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो कामबाण (अन्तराय कर्म) विनाशनाय पुष्पं।

ज्ञानामृत रहा सरस व्यंजन, हो तृप्त सदा इससे चेतन।
चेतन में रोग क्षुधादि नहीं, भोजन है इस तन का वेतन।।
जो अष्ट कर्म का नाश करें, वे सिद्धों का पद पाते हैं।
शिव पथ के राही बन जाते, जो जिन पद शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो क्षुधारोग (वेदनीय कर्म) विनाशनाय नैवेद्यं।

है कोटि सूर्य से दीप्तिमान, चेतन में ना मिथ्यात्व रहे।
हम दीप जलाते यह पावन, चेतन से ज्ञान की धार बहे।।
जो अष्ट कर्म का नाश करें, वे सिद्धों का पद पाते हैं।
शिव पथ के राही बन जाते, जो जिन पद शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो मोहान्धकार (नाम कर्म) विनाशनाय दीपं।

चेतन कर्मों से भिन्न रहा, दोनों रहते न्यारे-न्यारे।
ना कर्म नष्ट हो सके पूर्ण, हम धूप जलाकर के हारे।।
जो अष्ट कर्म का नाश करें, वे सिद्धों का पद पाते हैं।
शिव पथ के राही बन जाते, जो जिन पद शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अष्टकर्म (गोत्रकर्म) विनाशनाय धूपं।

अक्षय अखण्ड मेरा स्वरूप, खण्डित ना खंजर कर पाए।
पाने अखण्ड वह पद अनुपम, यह चरण चढ़ाने हम आए।।
जो अष्ट कर्म का नाश करें, वे सिद्धों का पद पाते हैं।
शिव पथ के राही बन जाते, जो जिन पद शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अक्षय पद प्राप्ताय (मोहनीय कर्म) विनाशनाय अक्षतं।

जैसी करनी वैसी भरनी, करनी का फल प्राणी पाते।
जो फल से पूजा करते वह, निश्चित ही शिवपुर हैं जाते।।
जो अष्ट कर्म का नाश करें, वे सिद्धों का पद पाते हैं।
शिव पथ के राही बन जाते, जो जिन पद शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो मोक्षफलप्राप्तये (आयु कर्म) विनाशनाय फलं।

निज के गुण निज में रहते हैं, फिर भी उनको विसराते हैं।
पाते अनर्घ्य पद वे प्राणी, जो जिनपद अर्घ्य चढ़ाते हैं।।
जो अष्ट कर्म का नाश करें, वे सिद्धों का पद पाते हैं।
शिव पथ के राही बन जाते, जो जिन पद शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यो (अष्ट कर्म) विनाशनाय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं।

पूर्णार्घ्य (छन्द छप्पय)

जल से त्रय रुज नशें, त्रास भव मैटे चन्दन।
अक्षत अक्षयवान्, पुष्प से काम निकन्दन।।
क्षुधा रोग नैवेद्य, दीप मोहान्ध नशावे।
धूप जलाए कर्म, मोक्ष फल फल से पावे।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य, बनाकर जिन का अर्चन।
किए भाव से विशद, प्राप्त हो सम्यक् दर्शन।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्ध परमेष्ठिने पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा - शांतीधारा दे रहे, शांती पाने नाथ!।
मुक्ती पथ में आपका, रहे हमेशा साथ।।

(शान्तये शांतिधारा)

दोहा - पुष्पांजलि करते विशद, चरण कमल में आज।
तव चरणों में आए हम, पाने शिवपद राज।।

(दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

नोट - (कर्म दहन के आठ अर्घ्य अग्नि में धूपदाने में धूप क्षेपण करते हुए मंत्रोच्चार पूर्वक चढ़ांए)

ज्ञानावरण कर्म (दोहा)

ज्ञानावरणादिक सभी, मति श्रुत अवधिज्ञान।
मनः पर्यय केवल्य को, ढके आवरण जान।।
पंचावरण विनाश कर, हो शिवपुर में वास।
अर्चा कर जिन सिद्ध की, से हो पूरी आस।।1।।

ॐ ह्रीं मतिज्ञानावरण कर्म रहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं नि. स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रुत ज्ञानावरण कर्म रहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं नि. स्वाहा।
ॐ ह्रीं अवधि ज्ञानावरण कर्म रहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं नि. स्वाहा।

ॐ ह्रीं मनःपर्यय ज्ञानावरण कर्म रहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं नि. स्वाहा।
ॐ ह्रीं केवलज्ञानावरण कर्म रहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं नि. स्वाहा।
ॐ ह्रीं सिद्ध चक्राधिपतये सिद्ध परमेष्ठिने मम् ज्ञानावरण कर्म निवारणाय अर्घ्यं।

(दर्शनावरण कर्म)

चक्षु अचक्षु अवधि तथा, केवल दर्शन चार।
कर्म दर्शनावरण है, निद्रा पंच प्रकार।।
कर्म दर्शनावरण नश, हो शिवपुर में वास।
अर्चा कर जिन सिद्ध की, से हो पूरी आस।।2।।

ॐ ह्रीं चक्षुदर्शनावरण कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं नि. स्वाहा।
ॐ ह्रीं अचक्षुदर्शनावरण कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं नि. स्वाहा।
ॐ ह्रीं अवधिादर्शनावरण कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं नि. स्वाहा।
ॐ ह्रीं केवलर्शनावरण कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं नि. स्वाहा।
ॐ ह्रीं निद्रा कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं नि. स्वाहा।
ॐ ह्रीं निद्रा निद्रा कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं नि. स्वाहा।
ॐ ह्रीं प्रचला कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं नि. स्वाहा।
ॐ ह्रीं प्रचला प्रचला कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं नि. स्वाहा।
ॐ ह्रीं स्त्यानगृद्धि कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं नि. स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने मम दर्शनावरण कर्म निवारणाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(मोहनीय कर्म)

भेद मोहनीय कर्म के, बतलाए अठबीस।
दर्शन मोह के तीन हैं, चारित के पच्चीस।।
सोलह भेद कषाय के, नो कषाय सब नाश।
अर्चा कर जिन सिद्ध की, से हो पूरी आस।।3।।

ॐ ह्रीं त्रिविध दर्शन मोहनीय कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं नि. स्वाहा।
ॐ ह्रीं सोलह विधि चारित्र मोहनीय कषाय रहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं।
ॐ ह्रीं नव प्रकार अकषाय मोहनीय कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं नि.स्वा.।
ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने मम् मोहनीय कर्म निवारणाय अर्घ्यं।

(अन्तराय कर्म)

दान लाभ भोगोपभोग,और वीर्य पहिचान।
भेद कहे अन्तराय के,करें गुणों की हान।।
अन्तराय को नाशकर,हो शिवपुर में वास।
अर्चा कर जिन सिद्ध की,से हो पूरी आस।।4।।

ॐ ह्रीं दानान्तराय कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं नि. स्वाहा।
ॐ ह्रीं लाभान्तराय कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं नि. स्वाहा।
ॐ ह्रीं भोगान्तराय कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं नि. स्वाहा।
ॐ ह्रीं उपभोगान्तराय कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं नि. स्वाहा।
ॐ ह्रीं वीर्यान्तराय कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं नि. स्वाहा।
ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने मम् अन्तरायकर्म निवारणाय अर्घ्यं नि.।

वेदनीय कर्म (शम्भू छन्द)

साता असाता कर्म अघाती, वेदनीय के हैं दो भेद।
होय कभी उत्साह जीव को, कभी प्राप्त होता है खेद।।
वेदनीय के नशते अव्यावाध सुगुण का होय प्रकाश।
सिद्ध प्रभु की अर्चा करके, होवे मन की पूरी आस।।5।।

ॐ ह्रीं साता वेदनीय कर्म रहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं नि. स्वाहा।
ॐ ह्रीं असाता वेदनीय कर्म रहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं नि. स्वाहा।
ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने मम वेदनीय कर्म निवारणाय अर्घ्यं नि.।

(आयु कर्म)

आयुकर्म के भेद चार हैं,नरक-पशु-नर-देव विशेष।
रोके निश्चित काल जीव को,निज आयू पर्यन्त अशेष।।
आयु कर्म का नाश किए जिन,अवगाहन गुण में हो वास।
सिद्ध प्रभु की अर्चा करके,होवे मन की पूरी आस।।6।।

ॐ ह्रीं मनुष्य आयु कर्म रहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं नि. स्वाहा।
ॐ ह्रीं तिर्यंच आयु कर्म रहिताय कषाय रहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं।
ॐ ह्रीं श्री नरक आयु कर्म रहिताय कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं नि.स्वा.।

ॐ ह्रीं देव आयु कर्म रहिताय कर्मरहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं नि.स्वा.।
ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने मम आयुकर्म निवारणाय अर्घ्यं।

(नाम कर्म)

रही प्रकृतियाँ नाम कर्म की,जैन धर्म आगम अनुसार।
पिण्ड रूप अठट्ाइस हैं चौदह, अपिण्ड प्रकृति के रहे प्रकार।।
नाम कर्म का नाश किए फिर, गुण सूक्ष्मत्व में होवे वास।
सिद्ध प्रभु की अर्चा करके, होवे मन की पूरी आस।।7।।

ॐ ह्रीं नामकर्म अष्टविंशति अपिण्ड प्रकृति रहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं नि.।
ॐ ह्रीं नामकर्म नामा चतुर्दश पिण्ड प्रकृति मध्य पंचषष्ठी प्रकृति रहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं।
ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने मम नामकर्म निवारणाय अर्घ्यं।

(गोत्र कर्म)

उच्च - नीच दो गोत्र कर्म के, भेद बताए हैं तीर्थेश।
इनका नाश करे जो प्राणी, अगुरुलघु गुण पाए विशेष।।
शिवपथ का राही बन जाए, नही रहे कर्मों का दास।
सिद्ध प्रभु की अर्चा करके, होवे मन की पूरी आस।।8।।

ॐ ह्रीं उच्च गोत्र कर्म रहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं नि. स्वाहा।
ॐ ह्रीं नीच गोत्र कर्म रहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं नि. स्वाहा।
ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने मम गोत्र कर्म निवारणाय अर्घ्यं नि.।

पूर्णार्घ्य

ज्ञान दर्शनावरण मोहनीय, अन्तराय है कर्म विशेष।
आयु नाम अरु गोत्र वेदनीय, कर्म नाशते सिद्ध अशेष।।
अष्ट कर्म के नशते प्राणी, करते है शिवपुर में वास।
सिद्ध प्रभु की अर्चा करके, होवे मन की पूरी आस।।9।।

ॐ ह्रीं श्री घातिकर्म रहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं नि. स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्री अघातिकर्म रहिताय कषाय रहिताय श्री सिद्धाय नमः धूपं।
ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने मम अष्टकर्मदहनाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जाप्य- ॐ ह्रीं सर्व कर्म रहिताय श्री सिद्धाय नमः।

जयमाला

दोहा - कर्म दहन पूजा करें, करने कर्म विनाश।
जयमाला गाते विशद, हो शिवपुर में वास।।

(शम्भू छन्द)

गुण गाने को सिद्ध प्रभू के, अर्पित है मेरा जीवन।
शुद्ध बुद्ध चैतन्य स्वरूपी, सिद्धों के पद में वन्दन।।
काल अनादी से कर्मों ने, हमको बहुत सताया है।
चतुर्गती में भ्रमण किया बहु, पार नहीं मिल पाया है।।1।।
ज्ञानदर्शनावरण वेदनीय, अन्तराय की तुम जानो।
त्रिंशत कोड़ा-कोड़ा सागर, स्थिति भाई पहिचानो।।
नीच गोत्र की बीस-बीस है, मोहनीय की सत्तर जान।
तैंतिस सागर आयु कर्म की, जानो यह उत्कृष्ट प्रधान।।2।।
वेदनीय बारह मुहूर्त्त की, नाम गोत्र की जानो आठ।
अन्तर्मुहूर्त शेष कर्मों की, स्थिति का आता है पाठ।।
मध्यम के हैं भेद अनेकों, जिसका नहीं है कोई प्रमाण।
बार-बार पाकर दुख भोगे, नहीं हुआ आतम कल्याण।।3।।
रत्नत्रय को पाकर प्रभु ने, तीन योग से करके ध्यान।
पूर्ण नाशकर मोहनीय को, सुख अनन्त पाए भगवान।।
ज्ञानावरणी कर्म नाशकर, प्रकट किया है केवलज्ञान।
कर्म दर्शनावरणी नाशा, केवल दर्शन जगा महान।।4।।
अन्तराय का अन्त किए जिन, वीर्यानन्त प्रकाश किया।
अनन्त चतुष्टय पाकर प्रभु ने, निज आतम में वास किया।।
इन्द्रों द्वारा रचना होती, समवशरण की अपरम्पार।
शीश झुकाकर वन्दन करते, प्राणी चरणों बारम्बार।।5।।
आयु कर्म के साथ नाम अरु, गोत्र वेदनीय करते नाश।
नित्य निरंजन शुभ अविनाशी, करते हैं चेतन में वास।।
अगुरुलघु सूक्ष्मत्व प्राप्त कर, पाते हैं गुण अव्याबाध।
अवगाहन गुण में अवगाहन, करके पाते हैं आह्लाद।।6।।

अन्तिम देह त्याग कर अपनी, क्षण में बन जाते हैं सिद्ध।
लोक शिखर पर प्रभू विराजे, अशरीरी हो जगत प्रसिद्ध।।
भाव बनाकर आये हैं हम, तव पद को पाने हे नाथ!
'विशद' भाव से वन्दन करते, चरणों झुका रहे हम माथ।।7।।

(छन्दः घत्तानन्द)

जय-जय अविकारी, आनन्दकारी, मोक्ष महल के अधिकारी।
जय-जय मंगलकारी, हे गुणधारी! भव बाधा पीड़ा हारी।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकसम्यक्त्व-अनन्तज्ञान-अनन्तदर्शन-अनन्तवीर्यअगुरु-लघुत्व-अवगाहनत्व-सूक्ष्मत्व-निराबाधत्वगुणसम्पन्न-सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - अष्ट कर्म को नाशकर, पाया शिवपुर वास।
अर्चा करके आपकी, होवे पूरी आस।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

प्रशस्ति

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री मूलसंघे कुन्दकुन्दाम्नाये बलात्कार गणे सेन गच्छे नन्दी संघस्य परम्परायां श्री आदि सागराचार्य जातास्तत् शिष्यः श्री महावीरकीर्ति आचार्य जातास्तत् शिष्याः श्री विमलसागराचार्य जातास्तत शिष्या श्री भरत सागराचार्य श्री विराग सागराचार्यः जातास्तत् शिष्याः आचार्य विशदसागराचार्य जम्बूदीपे भरत क्षेत्रे आर्यखण्डे भारतदेशे राजस्थान प्रान्ते, जयपुर नगरे श्री महावीर जिनालय, मानसरोवर, वी. नि. 2542 भादों मासे कृष्ण पक्षे चतुर्दशी शुक्र वासरे श्री सुगन्ध दशमी व्रत विधान लिख्यते इति शुभ भूयात्।